IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 6, Issue 1, August 2026

Impact Factor: 8.2

भारतीय ज्ञान प्रणाली और डिजिटल शिक्षा: शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण शैली का अध्ययन

डॉ० रीनू पाल

सहायक आचार्य

शिक्षा प्रशिक्षण विभाग, रूपरानी सुखनंदन सिंह महाविद्यालय,कानपुर

मधु पाण्डेय

शोध छात्रा

शिक्षा प्रशिक्षण विभाग, महिला महाविद्यालय पी०जी० कालेज, कानपुर

प्रो०(डॉ०) प्रज्ञा श्रीवास्तव

शिक्षा प्रशिक्षण विभाग

महिला महाविद्यालय पी०जी० कालेज,

सम्बद्ध छत्रपति शाहू जी महाराज वि०वि० कानपुर नगर, (उत्तर प्रदेश(

शोधसार

भारतीय ज्ञान प्रणालीविश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध ज्ञान परम्पराओं में से एक है, जिसकी आधारशिला गुरु-शिष्य परम्परा पर आधारित रही है। यह परम्परा केवल ज्ञान के हस्तांतरण का माध्यम नहीं थी, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक मूल्योंतथा आध्यात्मिक चेतनाका समन्वित मॉडल थी। वर्तमान डिजिटल युग में शिक्षा का स्वरूप तीव्र गति से परिवर्तित हुआ है। कृत्रिम

बुद्धिमत्ता ऑनलाइन शिक्षण, मिश्रित अधिगम, वर्चुअल कक्षाएँ तथा मुक्त शैक्षिक संसाधनों ने शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को नई दिशा प्रदान की है। ऐसे परिवेश में यह प्रश्न अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है कि क्या गुरु-शिष्य परम्परा के मूल तत्वों को डिजिटल शिक्षा में समाहित किया जा सकता है तथा शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण शैली किस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली के अनुरूप विकसित हो सकती है।यह शोध-पत्र गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, शिक्षक शिक्षा एवं डिजिटल शिक्षाशास्त्र से संबंधित उपलब्ध साहित्य का समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में यह प्रतिपादित किया गया है कि डिजिटल शिक्षा केवल तकनीकी माध्यम नहीं है, बल्कि यदि इसे भारतीय ज्ञान प्रणाली के व्यक्तिगत मार्गदर्शन, नैतिकता तथा सतत् चिंतनके साथ जोड़ा जाए तो यह समग्र एवं मूल्यपरक शिक्षा का प्रभावी माध्यम बन सकती है। शिक्षक प्रशिक्षकों की भूमिका केवल विषय-वस्तु प्रस्तुत करने तक सीमित न रहकर एक मार्गदर्शक के रूप में विकसित होनी चाहिए। अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि डिजिटल युग में गुरु-शिष्य परम्परा का पुनर्पाठ भारतीय शिक्षा को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध, तकनीकी रूप से सक्षम तथा वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

मुख्यशब्द:भारतीय ज्ञान प्रणाली, गुरुशिष्य परम्परा-, डिजिटल शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षक, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, **शिक्षण शैली।**

पृष्ठभूमि

मानव सभ्यता के विकास में शिक्षा सदैव परिवर्तन का प्रमुख माध्यम रही है। भारतीय शिक्षा परम्परा में ज्ञान को केवल सूचना या कौशल के रूप में नहीं देखा गया, बल्कि उसे आत्मविकास-,

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, August 2026 Impact Factor: 8.2

सामाजिक समरसता तथा लोककल्याण का साधन माना गया। वैदिक काल से लेकर नालन्दा, तक्षशिला तथा विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों तक गुरुशिष्य परम्परा भारतीय शिक्षा व्यवस्था - की आधारशिला रही। इस व्यवस्था में गुरु और शिष्य के मध्य स्थापित संबंध औपचारिक नहीं, बल्कि जीवनपर्यंत मार्गदर्शन, अनुशासन एवं संस्कार पर आधारित था।इक्कीसवीं शताब्दी में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने शिक्षा के स्वरूप को व्यापक रूप से परिवर्तित किया है। कोविड-19 महामारी के पश्चात ऑनलाइन शिक्षण, डिजिटल प्लेटफॉर्म, आभासी कक्षाएँ तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित शिक्षण उपकरण शिक्षा व्यवस्था का अभिन्न अंग बन चुके हैं। परिणामस्वरूप शिक्षण की प्रक्रिया अधिक सुलभ एवं व्यापक हुई है, किंतु इसके साथ शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य प्रत्यक्ष मानवीय संवाद, व्यक्तिगत मार्गदर्शन तथा मूल्यपरक शिक्षा में कमी भी अनुभव की गई। इस संदर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनर्पाठ अत्यंत आवश्यक हो जाता है।राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने स्पष्ट रूप से भारतीय ज्ञान प्रणाली, बहुविषयक शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगमतथा शिक्षक शिक्षा में भारतीय परम्पराओं के समावेशन पर बल दिया है। नीति यह मानती है कि शिक्षक केवल विषय विशेषज्ञ नहीं, बल्कि जीवनद्रष्टा, शोधकर्तातथा नवाचारी होना चाहिए। इस दृष्टि से शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण शैली में भी परिवर्तन आवश्यक है, जिससे वे तकनीकी दक्षता के साथ भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल्यों को आत्मसात कर सकें (शर्मा, 2023)।

साहित्यिक समीक्षा

- **Dr. Magdeline Singh (2025). DIGITAL GURU-SIKSHA: REIMAGINING INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM PEDAGOGIES FOR THE 21ST-CENTURY CLASSROOM.**

  यह शोध आलेख 21वीं सदी की कक्षा के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली की शिक्षाशास्त्रों को

DOI: 10.48175/IJARSCT-38055

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, August 2026
Impact Factor: 8.2

डिजिटल गुरुशिष्य मॉडल के रूप में पुनर्कल्पित करता है। लेखिका ने पारंपरिक मूल्यों एवं -

- Manashi Haloi & Prof. Brinda Bazeley Kharbirymbai (2025). Integrating the Indian Knowledge System (IKS) into Teacher Education: A Transformative Approach under NEP 2020.
  यह अध्ययन NEP 2020 के अंतर्गत शिक्षक शिक्षा में भारतीय ज्ञान परम्परा के एकीकरण की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। शोधकर्ताओं ने डिजिटल युग में शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण शैली को IKS के परिप्रेक्ष्य में पुनर्परिभाषित करते हुए एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया है।
- Rohit Mamgain (2025). Implementing NEP 2020 Recommendations: Promoting the Indian Knowledge System.
  यह शोध आलेख एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के क्रियान्वयन में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को बढ़ावा देने के व्यावहारिक पहलुओं पर केंद्रित है। मामगैन डिजिटल युग में शिक्षक प्रशिक्षकों की भूमिका को IKS के प्रभावी वाहक के रूप में परिभाषित करते हैं। वे तर्क देते हैं कि तकनीकी हस्तक्षेपों के बावजूद, पारंपरिक गुरु-शिष्य परम्परा की मूल भावना को शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बनाए रखना आवश्यक है, ताकि शिक्षार्थी तकनीकी कुशलता के साथ-साथ नैतिक रूप से भी सुदृढ़ हो सकें।
- आर. और देवी, एस. कुमार (2023). डिजिटल युग में नैतिक शिक्षा: चुनौतियाँ और समाधान.
  इस अध्ययन में डिजिटल परिवेश में नैतिक शिक्षा के समक्ष उत्पन्न होने वाली प्रमुख

चुनौतियों, जैसे डिजिटल विसंगति, साइबर धोखाधड़ी और नैतिक मूल्यों के क्षरण, का गहन विश्लेषण किया गया है। शोधकर्ता शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए पारंपरिक गुरु-शिष्य मॉडल को डिजिटल प्लेटफार्मों के साथ संयोजित करने का समाधान प्रस्तुत करते हैं। यह लेख विशेष रूप से इस बात पर जोर देता है कि शिक्षक प्रशिक्षण में नैतिक जागरूकता को डिजिटल शिक्षण शैली का अभिन्न अंग बनाना चाहिए।

- एस राजकुमार (2022). भारतीय महाकाव्यों में नैतिक शिक्षा के तत्व. यह शोध पत्र रामायण, महाभारत तथा अन्य भारतीय महाकाव्यों में निहित नैतिक शिक्षा के तत्वों को उजागर करता है, जो प्राचीन गुरु-शिष्य परम्परा की आधारशिला रहे हैं। लेखक का मानना है कि इन शाश्वत मूल्यों को आधुनिक शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा अपनाकर डिजिटल माध्यमों में समायोजित किया जा सकता है। यह अध्ययन समकालीन डिजिटल कक्षाओं में शिक्षकों के शिष्य के प्रति कर्तव्य, सम्मान और आत्मीय संबंधों को परिभाषित करने हेतु महाकाव्यों के ज्ञान को एक सशक्त संदर्भ के रूप में प्रस्तुत करता है।

- **भारतीय ज्ञान प्रणाली में गुरुशिष्य परम्परा का दार्शनिक आधार एवं शिक्षक प्रशिक्षकों की - शिक्षण शैली**

भारतीय ज्ञान प्रणाली का आधार ऐसी शिक्षा है, जिसका उद्देश्य केवल विषयगत ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास को सुनिश्चित करना है। भारतीय परम्परा में *"सा विद्या या विमुक्तये"* के सिद्धान्त के अनुसार शिक्षा मनुष्य को अज्ञान से मुक्त कर विवेकपूर्ण जीवन की ओर अग्रसर करती है। इस दृष्टि से ज्ञान को सूचना का संग्रह न मानकर अनुभव, चिंतन और आचरण का समन्वय माना गया है। इसी विचार पर आधारित गुरु-शिष्य परम्परा भारतीय शिक्षा की प्रमुख विशेषता रही है, जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, August 2026 Impact Factor: 8.2

विश्वास, संवाद तथा जीवनोपयोगी अधिगम का संबंध स्थापित होता है (राधाकृष्णन, 1953; National Education Policy, 2020)।वैदिक एवं उपनिषदिक परम्परा में गुरु को केवल ज्ञानदाता नहीं, बल्कि जीवन-मार्गदर्शक माना गया है। गुरुकुल व्यवस्था में शिक्षण प्रश्नोत्तर, संवाद, स्वाध्याय, मनन और अनुभव पर आधारित था, जिससे शिक्षार्थी की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित होती थी। याज्ञवल्क्य–मैत्रेयी, नचिकेता–यम तथा श्रीकृष्ण–अर्जुन के संवाद इस बात के प्रमाण हैं कि भारतीय शिक्षा तर्क, जिज्ञासा और आत्मबोध को समान महत्व देती थी। आधुनिक शिक्षाशास्त्र कीरचनावादी अधिगम सिद्धांत तथा अनुभवात्मक अधिगम जैसी अवधारणाएँ भी शिक्षार्थी की सक्रिय सहभागिता और अनुभव आधारित अधिगम पर बल देती हैं (Bruner, 1961; Kolb, 1984)।शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण शैली के संदर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणाली आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। शिक्षक को आजीवन शिक्षार्थी मानते हुए निरंतर अध्ययन, चिंतन और अनुसंधान पर बल दिया गया है। वर्तमान समय में शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा के साथ-साथ डिजिटल तकनीकों, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और नवीन शिक्षण पद्धतियों का ज्ञान भी आवश्यक हो गया है। इससे वे विद्यार्थियों की विविध अधिगम आवश्यकताओं के अनुसार प्रभावी शिक्षण वातावरण तैयार कर सकते हैं (कुमार, 2023)।भारतीय ज्ञान प्रणाली मूल्यपरक शिक्षा को भी विशेष महत्व देती है। सत्य, करुणा, अनुशासन, सहयोग और उत्तरदायित्व जैसे मूल्य शिक्षक के व्यवहार के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुँचते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक शिक्षार्थी की क्षमता और आवश्यकता के अनुसार शिक्षण की व्यवस्था की जाती थी, जो आजअनुकूली अधिगम औरवैयक्तिकृत अधिगम के रूप में विकसित हुई है। इसलिए शिक्षक प्रशिक्षकों को संवादात्मक शिक्षण, चिंतनशील अभ्यास, डिजिटल मेंटरिंग तथा आत्ममूल्यांकन जैसी रणनीतियों को अपनाना चाहिए, जिससे शिक्षा तकनीकी रूप से सक्षम होने के साथ मानवीय और मूल्यपरक भी बनी रहे (UNESCO, 2019)।

DOI: 10.48175/IJARSCT-38055

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, August 2026
Impact Factor: 8.2

- **डिजिटल युग में शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण शैली अवसर :, चुनौतियाँ एवं भारतीय ज्ञान प्रणाली के आलोक में समकालीन विश्लेषण**

डिजिटल प्रौद्योगिकी के विकास ने शिक्षा के स्वरूप, शिक्षण पद्धतियों तथा शिक्षक की भूमिका में व्यापक परिवर्तन किया है। इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ऑनलाइन शिक्षण मंच, वर्चुअल कक्षाएँ तथा मुक्त शैक्षिक संसाधनों ने ज्ञान को अधिक सुलभ और व्यापक बनाया है। शिक्षक प्रशिक्षक अब केवल विषय-वस्तु के प्रस्तुतकर्ता नहीं, बल्कि अधिगम के मार्गदर्शक, शोध-संयोजक तथा डिजिटल संसाधनों के प्रभावी उपयोगकर्ता बन गए हैं। इस परिवर्तन ने शिक्षक शिक्षा को अधिक लचीला, बहुविषयक और शिक्षार्थी-केंद्रित बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है(Prof. Brinda Bazeley Kharbirymbai, 2025)**।भारतीय ज्ञान प्रणाली के परिप्रेक्ष्य में डिजिटल शिक्षा का उद्देश्य केवल तकनीकी दक्षता विकसित करना नहीं, बल्कि शिक्षण को संवादात्मक, मूल्यपरक और अनुभव-आधारित बनाना है। गुरु-शिष्य परम्परा में प्रत्यक्ष संवाद, व्यक्तिगत मार्गदर्शन और सतत् अधिगम को विशेष महत्व दिया गया था। डिजिटल माध्यमों में भी यदि शिक्षक प्रशिक्षक वेबिनार, ऑनलाइन चर्चा, सहयोगात्मक परियोजनाओं और डिजिटल मेंटरिंग जैसी गतिविधियों का उपयोग करें, तो शिक्षण अधिक प्रभावी और सहभागितापूर्ण बनाया जा सकता है। इससे तकनीक और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित करने में सहायता मिलती**(Mamgain, 2025)**।डिजिटल शिक्षा ने शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए अनेक नई संभावनाएँ भी उत्पन्न की हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरण विद्यार्थियों की सीखने की गति, रुचि और कठिनाइयों का विश्लेषण कर व्यक्तिगत अधिगम को प्रोत्साहित करते हैं। इसी प्रकार** MOOCs, **ई-पुस्तकालय, मुक्त शैक्षिक संसाधन तथा वैश्विक शिक्षण मंच शिक्षकों और विद्यार्थियों को अंतरराष्ट्रीय ज्ञान-संसाधनों से जोड़ते हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली में भी प्रत्येक शिक्षार्थी की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षण पर बल दिया गया है,**

DOI: 10.48175/IJARSCT-38055

इसलिए आधुनिक डिजिटल उपकरण इस सिद्धांत को अधिक प्रभावी ढंग से लागू करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं(Singh, 2025)।यद्यपि डिजिटल शिक्षा के अनेक लाभ हैं, फिर भी इसके साथ कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। इंटरनेट पर उपलब्ध अप्रमाणित सामग्री, साहित्यिक चोरी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अनैतिक उपयोग, डेटा गोपनीयता तथा प्रत्यक्ष शिक्षक-विद्यार्थी संवाद में कमी जैसी समस्याएँ शिक्षण की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली सत्य, विवेक और उत्तरदायित्व पर आधारित है; इसलिए शिक्षक प्रशिक्षकों का दायित्व केवल तकनीकी कौशल विकसित करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में डिजिटल नैतिकता, आलोचनात्मक चिंतन तथा शोध ईमानदारी का विकास करना भी है (UNESCO, 2019)।समकालीन परिप्रेक्ष्य में प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षक वही माना जाएगा जो भारतीय ज्ञान प्रणाली के मूल्यों और आधुनिक डिजिटल तकनीकों के बीच संतुलन स्थापित कर सके। इसके लिए संवादात्मक शिक्षण, अनुभवात्मक अधिगम, चिंतनशील अभ्यास, डिजिटल मेंटरिंग तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उत्तरदायी उपयोग को शिक्षक शिक्षा का अभिन्न अंग बनाना आवश्यक है। ऐसी शिक्षण शैली न केवल राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की अपेक्षाओं को पूरा करती है, बल्कि विद्यार्थियों में ज्ञान, कौशल, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वित विकास भी सुनिश्चित करती है (Prof. Brinda Bazeley Kharbirymbai, 2025)।

- **भारतीय ज्ञान प्रणाली के आलोक में डिजिटल गुरु : शिष्य परम्परा का समन्वित मॉडल- शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण शैली के लिए भावी दिशा**

डिजिटल युग में शिक्षा के बदलते स्वरूप ने यह स्पष्ट किया है कि प्रभावी शिक्षण केवल तकनीकी संसाधनों पर निर्भर नहीं हो सकता। भारतीय ज्ञान प्रणाली के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान के साथ विवेक, नैतिकता और उत्तरदायित्व का विकास करना है। इसलिए शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण शैली ऐसी होनी चाहिए, जिसमें आधुनिक डिजिटल तकनीकों का उपयोग भारतीय शिक्षा-दर्शन के

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, August 2026 Impact Factor: 8.2

मूल सिद्धांतों के साथ संतुलित रूप से किया जाए। इससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक मानवीय, शिक्षार्थी-केंद्रित और मूल्यपरक बन सकती है (National Education Policy, 2020; UNESCO, 2021)।भविष्य की शिक्षक शिक्षा मेंडिजिटल गुरु-शिष्य मॉडलएक प्रभावी दृष्टिकोण के रूप में विकसित किया जा सकता है। इस मॉडल का आधार पाँच प्रमुख तत्व हैं—ज्ञान, संवाद, नैतिकता, प्रौद्योगिकी और आत्मचिंतन। शिक्षक डिजिटल मंचों के माध्यम से विषय-वस्तु उपलब्ध कराने के साथ-साथ विद्यार्थियों का मार्गदर्शन, परामर्श और सतत् मूल्यांकन भी कर सकता है। ऑनलाइन चर्चा, डिजिटल मेंटरिंग, सहयोगात्मक अधिगम और शोध-आधारित गतिविधियाँ गुरु-शिष्य संबंध को अधिक सशक्त बना सकती हैं। इस प्रकार तकनीक शिक्षक का स्थान नहीं लेती, बल्कि उसकी शिक्षण क्षमता को अधिक प्रभावी बनाती।भारतीय ज्ञान प्रणाली आत्मचिंतन और स्वाध्याय को शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग मानती है। इसी दृष्टि से शिक्षक प्रशिक्षकों को अपनी शिक्षण शैली मेंचिंतन-दैनंदिनी, ई-पोर्टफोलियो (डिजिटल संकलिका), सहपाठी मूल्यांकन तथा परियोजना-आधारित अधिगम जैसी रणनीतियों को शामिल करना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में आत्ममूल्यांकन, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान और स्वतंत्र अधिगम की क्षमता विकसित होती है। साथ ही, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में डिजिटल मेंटरिंग और भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित पाठ्यक्रमों को बढ़ावा देना आवश्यक है, ताकि शिक्षक तकनीकी दक्षता के साथ सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों को भी शिक्षण में समाहित कर सकें(Prof. Brinda Bazeley Kharbirymbai, 2025)।इस प्रकार स्पष्ट है कि डिजिटल युग में गुरु-शिष्य परम्परा की प्रासंगिकता समाप्त नहीं हुई है, बल्कि उसका स्वरूप परिवर्तित हुआ है। यदि शिक्षक प्रशिक्षक भारतीय ज्ञान प्रणाली के सिद्धांतों को आधुनिक डिजिटल शिक्षण पद्धतियों के साथ समन्वित करें, तो शिक्षा अधिक समावेशी, नवाचारी और जीवनोपयोगी बन सकती है। यह दृष्टिकोण न केवल राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के उद्देश्यों को सुदृढ़ करता है,

बल्कि भारतीय शिक्षक शिक्षा को वैश्विक स्तर पर एक विशिष्ट और मूल्यपरक पहचान भी प्रदान कर सकता है (कुमार, 2023)।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान प्रणाली की गुरु-शिष्य परम्परा केवल अतीत की सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि भविष्य की शिक्षा के लिए एक सशक्त वैचारिक आधार है। डिजिटल युग में शिक्षा का स्वरूप भले ही तकनीकी रूप से परिवर्तित हो गया हो, किन्तु शिक्षा के मूल उद्देश्य—ज्ञान, विवेक, चरित्र निर्माण एवं सामाजिक उत्तरदायित्व—आज भी समान रूप से प्रासंगिक हैं। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण शैली को भारतीय ज्ञान प्रणाली और आधुनिक डिजिटल तकनीकों के समन्वय पर आधारित होना चाहिए। शिक्षक को डिजिटल संसाधनों का कुशल उपयोग करते हुए विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ नैतिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास का भी मार्गदर्शक बनना होगा। यह अध्ययन यह भी इंगित करता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ऑनलाइन शिक्षण तथा डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म गुरु का विकल्प नहीं बन सकते; वे केवल उसकी शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, सुलभ एवं वैयक्तिक बनाने के साधन हैं। अतः भविष्य की शिक्षक शिक्षा में तकनीकी दक्षता के साथ भारतीय ज्ञान प्रणाली के मूल्य, संवादात्मक शिक्षण, चिंतनशील अभ्यास, डिजिटल नैतिकता तथा अनुसंधान संस्कृति का समन्वित समावेश किया जाना चाहिए। यही समन्वय राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के उद्देश्यों की पूर्ति करते हुए भारत को ज्ञान-आधारित, मूल्य-सम्पन्न एवं वैश्विक नेतृत्व प्रदान करने वाली शिक्षा व्यवस्था की ओर अग्रसर कर सकता है।

संदर्भ

- AICTE.) 2018 .(*Model Curriculum for Undergraduate Degree Courses in Engineering&Technology.*AICTE.

- CBSE.) **2021** .(*Value Education Kit: A Teacher's Handbook.*delhi: CBSE Publication.
- Dr. Magdeline Singh.) **2025** .(DIGITAL GURU-ŚI▯YA: REIMAGINING INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM PEDAGOGIES FOR THE 21ST-CENTURY CLASSROOM.*International Education and Research Journal*, 187-192.https://zenodo.org/records/17034791
- Manashi Haloi Prof. Brinda Bazeley Kharbirymbai.) **2025** .(Integrating the Indian Knowledge System (IKS) into Teacher Education: A Transformative Approach under NEP 2020. *International Journal of Science and Social Science Research* .https://www.ijsssr.com/index.php/j/article/view/432/394
- Rohit Mamgain.) **2025** .(Implementing NEP 2020Recommendations: Promoting the Indian Knowledge System.*Integrated Journal for Research in Arts and Humanities* .https://www.iarj.in/index.php/ijrah
- UNESCO.) **2019** .(*Education for Sustainable Development Goals: Learning Objectives. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization.*UNESCO.
- **अ) .सिंह .2021 .(*भारतीय ज्ञान परम्परा एवं शिक्षा.* उत्तराखंडउत्तराखंड मुक्त : .विश्वविद्यालय**
- **आरऔर देवी ., एस) .कुमार .2023चुनौतियाँ और :डिजिटल युग में नैतिक शिक्षा .(.समाधान*भारतीय शैक्षिक तकनीकी जर्नल*,** 34-48.
- **आर) .शर्मा .2023 .एक सैद्धांतिक विवेचन :नैतिक शिक्षा .(*शैक्षणिक अनुसंधान पत्रिका*,** 45-60.
- **एच) .द्विवेदी .पी.2020 .परंपरा और उसका सामाजिक-भारतीय संत .(***impact* ***वाणी प्रकाशन.***

IJARSCT

ISSN: 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Volume 6, Issue 1, August 2026

Impact Factor: 8.2

- **एस राजकुमार) .2022 .भारतीय महाकाव्यों में नैतिक शिक्षा के तत्व .(***मानविकी शोध*, 122**-**125**.**
- **एस) .राधाकृष्णन .1948 .(***The Bhagavadgita.*HarperCollins Publishers.
- **एस) .जैन .के.2019 .(***जैन दर्शन.मूल सिद्धांत और समकालीन प्रासंगिकता :* **प्रभात प्रकाशन.**
- **भारत सरकार) .2020 .(***राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* **शिक्षा मंत्रालय.**
- **भारत सरकार) .1966 .(***शिक्षा और राष्ट्रीय विकास पर रिपोर्ट.कोठारी आयोग :* **शिक्षा मंत्रालय.**
- **वी और .मिश्र के पाठक) .2024आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा का .(.समावेश***शिक्षा और समाज*, 78**-**92**.**